भारतीय शास्त्रीय संगीत एक सामान्य परिचय

डॉ. हरिओम सोनी
सहायक प्राध्यापक, अध्यक्ष-संगीत विभाग
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

संगीत एक कला है एवं जितनी भी कलाएँ वर्तमान में व्याप्त है वह कहीं ना कहीं प्रकृति से प्रेरित है। अर्थात् कलाओं की उत्पत्ति प्रकृति से प्रेरणा लेकर की गई होगी। संगीत की उत्पत्ति भी प्रकृति के द्वारा क्रमिक रूप से हुई, जैसे सूर्य के उदय होने और अस्त होने से लय के तत्व को ग्रहण किया गया होगा, हवाओं के चलने की ध्वनि से या बादलों की गरजन से स्वर ग्रहण किया गया होगा इत्यादि। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक संगीत की स्थिति को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि प्रारंभ से ही संगीत की उत्पत्ति एवं विकास का क्रम अत्यंत धीमा रहा होगा। जैसे इस पृथ्वी पर जीवों की उत्पत्ति का क्रम या जिस प्रकार मिट्टी के निर्माण की प्रक्रिया हजारों करोड़ों वर्षो के बाद परिष्कृत रूप में आज हमारे पास उपलब्ध है, संभवतः इसी प्रकार संगीत की उत्पत्ति हुई होगी।

अतः इस प्रकार संगीत तो प्रकृति में पहले से ही व्याप्त था परन्तु मनुष्य ने जैसे-जैसे संगीत को समझा उसने वहीं से संगीत को साकार रूप देना प्रारंभ किया। मनुष्य जैसे-जैसे संगीत को समझता गया उसके स्वरूप में परिवर्तन एवं परिवर्धन करता चला गया जिससे संगीत का परिष्कृत स्वरूप सामने आया और यह क्रम आज भी निरंतर गति से चल रहा है। आगे चलकर मनुष्य ने अपनी बुद्धिमत्ता से संगीत को गायन वादन एवं नृत्य तीन भागों में बांट कर वर्गीकृत किया।

संगीत प्रस्तुत करने के क्रम में उसकी लय, ताल एवं स्वर लहरियों के साथ-साथ साहित्य की मूलभूत आवश्यकता महसूस हुई। साहित्य निर्माण के क्रम में पहले भाषा का विकास हुआ और आगे चलकर साहित्य निर्माण की प्रक्रिया आरंभ हुई इसके पश्चात् क्रमिक विकास के फलस्वरूप विभिन्न विषयों पर गेय साहित्य का निर्माण होता चला गया।

भारतीय शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति वेदों से मानी गई एवं जिसमें सामवेद में संपूर्ण संगीतमय है। प्राचीन काल से ही संगीत की दो धाराए प्रचलित है जिसमें एक मार्गी संगीत दूसरी देशी संगीत। मार्गी संगीत के नियम बनाए गए थे जिनका पालन अनिवार्य था। भारतीय संगीत का प्रयोग प्रारंभ से ही ईश्वर उपासना हेतु किया गया इस प्रयोजन हेतु मार्गी संगीत प्रयुक्त किया गया। वैदिक काल में यज्ञ अनुष्ठान में प्रयुक्त मंत्रोच्चारण सस्वर किये जाते थे एवं मंदिरों में ईश्वर आराधना हेतु पदों का गायन किया जाता था इसी प्रकार नृत्य भी मंदिरों में ही ईश्वर आराधना हेतु

किये जाते थे। यह सभी मार्गी संगीत के अनुरूप होते थे। संगीत का दूसरा प्रकार था देशी संगीत। देशी अर्थात् की रूचि के अनुरूप प्रयुक्त होने वाला संगीत, यह संगीत का एक ऐसा प्रकार था जिसमें नियमों की शिथिल एवं इस प्रकार के संगीत का प्रयोजन का मनोरंज था। इस प्रकार देशी संगीत में भारतीय संगीत का स्वरूप अक्षु

मध्य काल में देश, काल, भाषा, संस्कृति में वृहद रूप में परिवर्तन हुए संगीत भी इससे अछूता ना रह जहाँ प्राचीन कालीन सामवेदीय संगीत का प्रयोग ईश्वर आराधना हेतु किया जाता था एवं संगीत संबंधी प्रस्तुति में की जाती थी वहीं मध्य काल में सांगीतिक प्रस्तुतियाँ मुगल राजदरवारों में की गई जिससे संगीत का आध्यात्मिक स्वरूप पूर्णतः परिवर्तित हो गया। जिससे संगीत को गंभीर हानि पहुंची। सर्वाधिक दुष्प्रभाव शास्त्रीय पड़ा जहाँ शास्त्रीय नृत्य मंदिरों में ईश्वर आराधना हेतु किया जाता था वही मध्य काल में मुगल दरवारों में के मनोरंजन हेतु किया गया जिससे नृत्य का स्वरूप एवं भाव पूर्णतः बदल गए।

वर्तमान समय में देश में दो प्रकार का शास्त्रीय संगीत प्रचलित है पहला उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत दक्षिण भारतीय शास्त्रीय संगीत। दक्षिण भारतीय संगीत दक्षिण के कुछ राज्यों में प्रचलित है एवं उत्तर भारतीय संपूर्ण देश में प्रचलित है। दक्षिण भारत पर मुगल व अन्य संस्कृतियों का ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ा इसलिये संगीत भी लगभग अपने मूल स्वरूप में रहा परन्तु उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत का स्वरूप मुगल संस्कृति एवं के मिश्रित रूप के कारण परिवर्तित रूप में हमारे पास उपलब्ध है। तथापि संगीत की मूल आत्मा शास्त्रोक्त एवं परंपरा के अनुरूप ही है।

शास्त्रीय संगीत जिसके अन्तर्गत गायन स्वर प्रधान होता है, शब्द या साहित्य द्वितीय भूमिका में रह शास्त्रीय गायन में राग गायन होता है जिसमें नियमबद्ध रूप से स्वरावलियों का गायन-वादन किया जाता है। अन्तर्गत राग में प्रयुक्त स्वरावलियों का विस्तार कर राग प्रस्तुत किया जाता है। लय वाद्यों के अन्तर्गत विभिन्न एवं लय के विभिन्न स्वरूपों के आधार पर तालों पर आधारित बंदिशों का विस्तार किया जाता है। इस प्रकार भा शास्त्रीय संगीत की मुख्य विशेषता विस्तारशीलता है और यही विस्तारशीलता ही भारतीय शास्त्रीय संगीत के का मूल आधार है।